विशेष

कविता का सारा वैभव भाषा पर है - त्रिलोचन

आशुतोष तिवारी

सन् 1988 के शरद के दिनों में हिन्दी कविता की प्रगतिशील धारा के अत्यंत महत्वपूर्ण कवि त्रिलोचन शास्त्री अम्बिकापुर में आकाशवाणी के एक आयोजन में शामिल होने आये थे। उन दिनों यहां आकाशवाणी में विद्वान और हिन्दी साहित्य के अनुपम अध्येता सुरेश पाण्डेय कार्यक्रम अधिशासी थे। उनके आवास पर ठहरे त्रिलोचन शास्त्री लगभग एक-डेढ़ महीने तक समूचे अम्बिकापुर के साहित्यिक जन के मेंहमान बने हुए थे।

आशुतोष तिवारी उन्हीं दिनों में त्रिलोचन शास्त्री जी से जेबी टेपरिकार्डर पर यह साक्षात्कार लिया था। आशुतोष ने 'इन्टरव्यू' पर इत्मिनान से काम करने की सोच रख दिया। वर्षों तक आलमारी के कोने में पड़े इन कैसेटों को उनकी जीवन-संगिनी श्रीमती शशि तिवारी ने सुना। नब्बे-नब्बे मिनट के इन कैसेटों को वर्षों बाद टेपरिकार्डर पर चलाने की कोशिश करने पर पहला कैसेट इतना जाम हो गया था कि उसने चलने से इनकार कर दिया। दूसरे कैसेट में कैद हिन्दी के प्रगतिशील धारा के अनन्य कवि त्रिलोचन से आशुतोष तिवारी की अब तक अप्रकाशित बातचीत को शशि जी ने लिपिबद्ध करके पाण्डुलिपि तैयार करने का श्रमसाध्य कार्य किया।

इस साक्षात्कार को उपलब्ध कराने के लिए आशुतोष की जीवन-संगिनी श्रीमती शशि तिवारी जी का हृदय से आभार है। उपलब्ध पाण्डुलिपि के अनुसार ऐसा अनुमान होता है कि त्रिलोचन जी और आशुतोष पहले कैसेट में हिन्दी साहित्य और हिन्दी कविता के साथ ही साथ वृहत्तर भारतीय साहित्य पर चल रही होगी। इस कैसेट के अंतिम अंशों में भारत के महान कवि, दार्शनिक, नोबल पुरस्कार से देश को गौरवान्वित करने वाले भारतीय मनीषा के सूर्य रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर चर्चा चल रही होगी.....

आशुतोष तिवारी हिन्दी के प्रमुख आलोचक थे। आज हम सभी के बीच वह नहीं हैं। साक्षात्कार उन्होने

आशुतोष - वे (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) जब सोलह साल के हुए सतहत्तर या छिहत्तर के उन्नीस सौ नहीं अठारह सौ वह अठारह सौ एकसठ के थे।

त्रिलोचन- साठ में कि एकसठ में तो वह कम उम्र में ही कविता करने के लिए लिखकर रखने लगे कागज पर 12 साल के थे तो इस पर चौंकने की बात नहीं है। शख्स का जिसका अनुबंध बन जाएगा वह कविता कर लेगा।

आशुतोष- जैसे सुकान्त भट्टाचार्य ।

त्रिलोचन- हां-हां सुकान्त भी है, सुकान्त तो छपा हुआ है । छाड़पत्रों बढ़िया कविता है। छाड़पत्र को क्या कहते हैं ? झाड़पत्र कहते हैं। झाड़पत्र यानी कि कोई रोका न जा सके, अवरुद्ध न किया जा सके। तो रवीन्द्रनाथ के पिता ने उस समय के प्रख्यात विद्वानों को बुलाया था । सोलह साल के वह हो गए थे । और योगेश ने ये कहा आने पर उन दिनों चाय-वाय नहीं चलती थी शर्बत चलता था। तो उसने शर्बत पिलाया। और उन्होंने कहा कि ये मेरा छोटा लड़का कविता करता है है तो आप लोग सुनकर बतायें कि ये कैसा है । तो देवेन्द्रनाथ के बुलाये हुए लोगों में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे महापुरुष जो सरल पण्डित विद्वान और बांग्ला गद्य के प्रवर्तक कहें, माने प्रवर्तक तो पहले से हो गया था । लेकिन बांग्ला गद्य भी उन्होंने लिखा और अच्छा लिखा। इसी तरह से और कई जन थे। सुन्दर त्रिवेदी बुलाए गए, ये कान्यकुब्ज ब्राम्हण थे जो कि वहां दो पुश्त से बसे थे। विज्ञान संबंधी विषयों के सर्वमान्य विद्वान रामेन्द्र स्वामी त्रिवेदी इसी तरह से शिवनाथ शास्त्री और कई मने जो विख्यात विद्वान थे। हरप्रसाद शास्त्री बुलाये गए, ये दवा पढ़ेंगे तो मालूत होगा इनदवा अर्थ जब इनका काम देखेंगे यानी कि पढ़ने की आदत डालना चाहिए। तो खैर ये लोग आये और कविता पाठ किये और रवीन्द्रनाथ से कहा कि कविता का पाठ करें और रवीन्द्रनाथ कविता पढ़ने लगे और वो लोग शान्त बैठे रहे सुनते चले गए। तो तीन-चार कविता पढ़ने के बाद उन्होंने देखा कि पण्डित लोग चुपचाप सुन रहे थे । तो उन्होंने कहा- "अरू कवि की" और पढ़ूँ क्या ? तो विद्यासागर ने कहा - चलो आगे पढ़ो तो उन्होंने घंटे- डेढ़ घंटे तक पाठ किया। विद्यासागर उठे अपने आसन से और सब विद्वानों से अनुरोध किया कि आप लोग खड़े हो जाइए। हम लोगों को बंगाल के भावी महापुरुष को नमस्कार करना है और सभी पण्डितों ने सोलह वर्षीयय रवीन्द्रनाथ को नमस्कार किया। भावी महापुरुष थे।

> क्रांति का फैशन प्रतिबद्धता है । तो जो प्रतिबद्ध होगा वह लिख ही नहीं समता अपनी प्रतिबद्धता के बाहर । जैसे हम कहें कि तुलसीदास को कहें कि राम भक्ति को छानकर हम अलग कर देंगे, बाकी जो तुलसीदास में है उसे हम रखेंगे तो भईया तुलसीदास ही गायब हो जाएंगे। इसी तरह से आग्रह है जो हमारे यहां है, वह निज का है आप हमारी कविता पढ़कर हमें गालियां दीजिए लेकिन हम अपनी प्रतिबद्धता नहीं छोड़ेंगे।

तो कविता में उम्र नहीं देखी जाती यह हवाला है। और इसका मतलब हर कविता लिखने वाला आरंभ से ही रवीन्द्रनाथ हो जाएंगे यह भी नहीं कहा जा सकता और रवीन्द्रनाथ की कविताओं में इतने स्तर हैं, इतने दांक-पेंच हैं, भाषा और व्याकरण के रूप इतने भिन्न-भिन्न हैं जो व्याकरण को भी चिन्तित कर देते हैं। बहुतो को अखरती है लेकिन बहतों को रूचती है। और आरंभ की कविताएं जो उनकी प्रशंसित और सराही गई थीं। वात संकलन में जमा हैं। बंगाल में जिनको रूमानी कविता कहते हैं उसका प्रवर्तन बहुत पहले से ही हो गया था लेकिन इस रूमानी कविता को शिखर पर पहुंचाया रवीन्द्रनाथ ने। और रवीन्द्रनाथ जी लोक जीवन, लोक नायक बन गये । मेरा कहना ये है कि रचनाकार जब नया होता है। जब वो कविताओं का बोझ सिर पर नहीं लिए होता है तब योगदान योग्य होता है । तब वह किसी की नकल नहीं करता है। और कविता के लिए पाण्डित्य हो, ठीक है। पाण्डित्य के बिना तो मालूम नहीं होता । यह है कि भाव को ग्रहण करने की शक्ति ये भाव मनुष्य शरीर का छनद शरीर के आकार, चेष्टाएँ पूंजी ये सब । तो इन तमाम के साथ कविता, कविता बनती है।

कविता को सामान्य बनाकर जब लिखा जाएगा, जैसे गद्य में, जैसे सामान्य बोला जा सकता है। तो कविता में सामान्य विषय को असामान्य बनाना पड़ता है। ये कविता का खास काम है और हर कवि के साथ जिसको फन कहा जाए। यह काम जिसमें जितना ही हो वो उतना बढ़िया है।

आशुतोष- एक रचनाकार के लिए प्रतिबद्धता आवश्यक है ऐसा नहीं है ?

त्रिलोचन- तुलसीदास राम के भक्त हैं, और राम की भक्ति है... और राम के बिना कोई प्रयोग ही नहीं तो तुलसीदास की प्रतिबद्धता को आप कैसे समझते हैं बताइए। प्रति- बद्धता पर मेरा कहना है कि मैं प्रतिबद्ध हूँ। मैं मार्क्सवाद को स्वीकार करता हूँ। किसान और मजदूर की क्रांति का हामी है। यह मेंरी अपनी निज

की बात है। तो हो सकता है आप इसका विरोध करते हैं लेकिन इसके बिना तो मेरा काम चल ही नहीं सकता । इसके बिना प्रतिबद्धता का, यह मैं आपके कहने अपना ये आधार नहीं छोड़ता । वही मुझे जीवित रखेगा, अगर जीवित रहूंगा। और वह मैं छोड़ दूंगा तो मैं किसी काम का नहीं रहूंगा। अज्ञेय मार्क्सवाद को पसंद नहीं करते हैं, तो अज्ञेय कवि नहीं हैं यह कहना तो संभव नहीं है । अज्ञेय कवि हैं और अज्ञेय में यदि प्रतिबद्धता अगर है तो नर-नारी के प्रेम के प्रति भी, क्रांति के प्रति भी नहीं है। प्रतिबद्धता तो आज भी क्रांति की है और अज्ञेय तो हथियार वालों के साथ थे। मुझे ये आश्चर्य होता है कि ये आदमी क्रांति के उपर एक भी पंक्ति क्यों नहीं लिखा। मुझे लगता है ये फंस से गये और यशपाल जो थे। यशपाल ने थोड़ा सा लिखा है ज्यादा नहीं; और क्रांति का दर्शन तो यशपाल में भी नहीं है वह आपको देखना हो तो विश्वनाथ गंगाधर चंपायन में चन्द्रशेखर आजाद की जीवनी लिखी हे, जिसको छापा था बटुक प्रसाद अग्रवाल ने। यह क्रांतिकारी है, बाद में सरकारी नौकरी में ये फिर रिटायर हुए। फिर रिटायर्ड होने के बाद कुछ दिन में मरे। उन्होंने ही इस जीवनी को छापी थी। आपको मालूम होगा चंपायन कहानीकार भी थे चंपायन कवि भी थे, और रानी लक्ष्मीबाई पर कविताएं लिखी और एक किताब भी लिखी थी जो गायब हो गई है तो चंपायन क्रांति की बात कहना नहीं भूलते थे। और चंपायन चन्द्रशेखर के साथ शरीर रक्षक के रूप में रहा करते थे बराबर यहां तक कि अन्तिम समय में भी उनके साथ थे। आजाद के कहने पर अपने को बचाया था। वो भाग गये थे और दूसरे जो सज्जन भाग गए थे.....(थोड़ी देर की चुप्पी) दूसरा... जो भागे थे उनका नाम अभी मैं भूल रहा हूँ, बाद में याद आ जाएगा तो बताऊँगा बाद में सन्यासी हो गए। होंगे तो अभी होंगे। तो ये लोग क्रांति की बात करना जीवन में कभी भूलेंगे नहीं? तो मेरा यह कहना है कि क्रांति का फैशन प्रतिबद्धता है। तो जो प्रतिबद्ध होगा वह लिख ही नहीं समता अपनी प्रतिबद्धता के बाहर। जैसे हम कहें कि तुलसीदास को कहें कि राम भक्ति को छानकर हम अलग कर देंगे, बाकी जो तुलसीदास में है उसे हम रखेंगे तो भईया तुलसीदास ही गायब हो जाएंगे। इसी तरह से आग्रह है जो हमारे यहां है, वह निज का है आप हमारी कविता पढ़कर हमें गालियां दीजिए लेकिन हम अपनी प्रतिबद्धता नहीं छोड़ेंगे। ये है कि प्रतिबद्धता समाज के लिए अनिवार्य है। यह मैं नहीं समझता; कुछ धोखेबाज लोग अपने को प्रतिबद्ध घोषित करते हैं। और वे प्रतिबद्ध हो और प्रतिबद्ध होने का मतलब है उसके लिए हम कभी जान देने के लिए भी तैयार होंगे। ये है प्रतिबद्धता। कोई फैशन नहीं। अगर आप से पूछे कि आप प्रतिबद्ध हैं तो मै कहता हूँ कि भई यह मेरा निजी सवाल है। मैं एक सवाल के जवाब में कुछ भी बोलना अच्छा ही चाहता हूँ। यद्यपि आपके सामने मैंने यह बात कही।

आशुतोष- बोलियों में साहित्य नहीं रची जा रही, यदि रची जा रही है तो नहीं के बराबर रची जा रही है ? तो उसका सही मूल्यांकन नहीं हो पा रहा है। और जैसे पढ़ीस जी हैं उनका उचित मूल्यांकन डॉ. रामविलास शर्मा के लिखने के बाद ही संभव हो सका।

त्रिलोचन- उनकी एक किताब छपी थी पहले ज्यादा मोटी नहीं थी । चकल्लस नाम था उसका । बाद में चकल्लस नाम से अखबार निकाला था। अमृतलाल नागर और कई लोगों की। तो चकल्लस नाम की पत्रिका थी। यह गंभीर थी व्यंग्यात्मक भी थी। वो देहात वालों को बुद्धू नहीं समझते थे, जैसे रमई काका, चन्द्रभूषण त्रिवेदी के। माने उन्होंने कविता लिखी है। 'धोखा हो गया', 'प्रियतमा' या उनके पेट की पीर, कविता है- मरीज है अस्पताल में भर्ती होने जाता है। तो वो जाता है तो डॉक्टर कहता है, खटिया नहीं है, तो डॉक्टर से कहता है मरीज कि कोई कोने में जगह दिखा दीजिए हम अपनी कमरी बिछा लेंगे उस पर सोये रहेंगे, तो इलाज कर दीजिए। तो, डॉक्टर कहता है खटिया भर्ती नहीं होता। तो किसी तरह से टोपी वालों (नेता) से लिखवाकर लाता है तो तुरंत खटिया भी खाली हो जाता है और भर्ती भी हो जाता है।

आशुतोष- कितना प्रहार किया है ?

त्रिलोचन- तो ये बौछार नाम के संस्करण से निकला है तो बौछार नाम अपने सुना है कि नहीं सुना है ?

आशुतोष- नहीं सुना है।

त्रिलोचन- तो बौछार को छपने में चौदह साल लगा था। तो मैं लखनऊ में अवधी कविता पढ़ने के लिए न जाने कैसे बुलाया गया था। पत्र-पत्रिकाओं में मैंने अवधी कविताएं छपवाई थी । खैर चन्द्रभूषण त्रिवेदी अपने घर ले गए और कहा यह घर मैंने जमीन सहित बौछार की आमदनी से खरीदा है। बौछार जो है, उसके तब तक दस संस्करण निकल गये थे। विज्ञापन कहीं दिये ? उन्होंने बताया बिना विज्ञापन के वे बिके। मेरे गांव में इसकी पांच प्रतियां तक बिकीं। तो, बौछार का संस्करण इतना बिका, लेकिन सवाल यह है कि लिखने वाला समझता हो, वातावरण की काफी समझ अच्छी हो और उसका रख रखाव अच्छा हो।

आधुनिक हिन्दी कविताएं, इतनी अधिक बिकी हैं यह तो मैंने नहीं देखी। लखनऊ में त्रिवेदी जी ने तीन बरस अन्दर दो मकान खड़ा कर किया। तो अब चन्द्रभूषण जी नहीं हैं, तो ये लोग

अवधी के अच्छे कवियों में आये। अवधी में ऐसे बहुत से अज्ञात कवि है। जिनका पता चले तो नई चीजें छपे। तो, लोगों को पता चलेगा कि वे कितने ऊँचे दर्जे के कवि हैं। तो, लेकिन सवाल यह है कि आलोचक समझता है कि आज आधुनिक हिन्दी में ही हिन्दी है; और ये जनपदीय भाषाओं को लिखने का अलग-अलग खाना बनाता है।

आशुतोष- आपने तो लिखा है, जनपदीय भाषा में ?

त्रिलोचन- वो तो लिखा है और दूसरी बात यह है कि मैं स्थानीय शब्दों का प्रयोग भी किया है। लेकिन केवल अवध में पूरा भारत मेरा घूमा हुआ है, जहां के शब्द मुझे अच्छे लगते हैं वहां का शब्द मैं प्रयोग करता हूँ। राजस्थान का शब्द दे देता हूँ, पंजाब का शब्द मेरे काम का लगा तो मैं दे देता हूँ। और मेरा यह कहना है कि कवि को पूरी राष्ट्रीय चेतना को अपने अन्दर रखना चाहिए, लेकिन जो राष्ट्र को संचालित करने वाले ही राष्ट्र को खा रहे हैं। तो, आपककी राष्ट्रभक्ति क्या कहेगी ? इसलिए राष्ट्रभक्ति की रचना आप कहें तो बहुत से लोग मौज से नहीं सुन पायेंगे।

आशुतोष- आपके प्रिय कवि और आलोचक कौन हैं ?

त्रिलोचन- जितने भी कवि हैं, मेरे प्रिय कवि हैं और जितने भी आलोचक हैं सब मेरे प्रिय आलोचक हैं।

आशुतोष- मार्क्सवादी कवियों में पाब्लो नेरूदा को लेते हैं। जुलियस जांसी भी हैं, ये लोग सीधे राजनीति से जुड़े हुए लोग हैं।

त्रिलोचन- जुलियस जांसी का गद्य काव्य है और उनकी एक ही तो किताब है "तख्ते पर शेख" जिसको यह नाम दिया है अमृतलाल नागर ने अपने अनुवाद में। और इस पुस्तक का कई लोगों ने अनुवाद किया है; तो बहरहाल जांसी ने कमरे में बन्द रहते हुए उन्होंने समय बचा के और आँख बचाके जो लिखा है, वह है। तो प्रतिबद्ध जुलियस जांसी था। अब उससे तुलना करता हूँ तो मैं कांप उठता हूँ, उसमें आत्मीय गुण था। यह प्रतिबद्धता होती है। पाब्लो नेरूदा का नाम लेते हैं, अंग्रेजी में अनुदित (अस्पष्ट ध्वनि), उन्होंने स्पेनिश में कविता किया है, तो वहां की शैली है जीने की। वह शैली अब बदल चुकी है। हमारे यहां चर्चा जब पुराना प्रतिष्ठित सम्मानित हो जाता है, तब उनके यहां धारा अब बदल गई है। इसी तरह से पालएन वार्ज हुए हैं फ्रांस के, लोर्का हुए हैं स्पेन में, खासे लोग मारे गए थे, ये गृह युद्ध वाले प्रकरण में। तो ये लोर्का तो छत्तीस साल की उम्र में ही बेचारे मारे गए थे, लेकिन बहुत तगड़े कवि हैं, स्पेनिश के, और कवियों का पता भाषाओं के भेद के कारण अनुवाद में पढ़कर लगाते हैं, सराहते नहीं। उन पर मुझे तरस आता है। कवियों को चाहिए कि अंग्रेजी के अलावा कोई और यूरोपीय भाषा भी जरूर सीखें और इसके अनुभव शक्ति और आस्वाद करने की शक्ति विकसित हो सके।

आशुतोष- आप तो दो-तीन भाषाएं जानते हैं।

त्रिलोचन- हां मैंने जब पढ़ा जब..।

आशुतोष - तो मेरा सवाल यह था कि पाब्लो नेरूदा सीधे राजनीति से जुड़े हुए आदमी थे, वे संघर्ष भी करते थे और कविता भी लिखते थे।

त्रिलोचन- और वह राजदूत होकर आपके भारत में भी रह चुके हैं मालूम है कि नहीं ?

आशुतोष- जी नहीं मालूम है।

त्रिलोचन - उन्होंने डायरी लिखी है जिसमें नेहरू की कटुतम आलोचना की है।

आशुतोष- तो सवाल यह था कि.....कि वे सीधे सड़क पर भी संघर्ष करते थे और कविता भी लिखते थे यह कहां तक सहायक कविता लिखने में ?

त्रिलोचन- लोर्का जो था वह संघर्ष भी किया और कविता भी करता था।

आशुतोष- जैसे माखनलाल चतुर्वेदी जेल भी गये, संघर्ष भी किया, कविताएं भी लिखीं, यह कहां तक तीखा बनाता है?

त्रिलोचन- वही प्रतिबद्धता थी माखनलाल चतुर्वेदी में और माखनलाल चतुर्वेदी बाद के उम्र में आजादी के बाद विक्षुब्ध कवि हुए। वे वैसी कविताएं लिख रहे थे, जैसे आम लोग लिख रहे थे। लेकिन फिर भी अंगद की भूमिका में गद्य में नहीं करते, लेकिन अंगद से उनका पेट भर गया। तो माखनलाल चतुर्वेदी नवीनतम पीढ़ी के साथ थे अन्त तक यह बहुत बड़ी बात थी इतना बड़ा विकास किसी एक आदमी ने नहीं किया।

आशुतोष- एक गीत सुनाइए!

त्रिलोचन- एक गीत सुनाएँ-

जला है जीवन यह आतप में दीर्घकाल;
सूखी भूमि, सूखे तरू, सूखे सिक्त आलवाल;
बन्द हुआ गुंज, धूलि-धूसर हो गये कुंज,
किन्तु पड़ी व्योम-उर बन्धु, नील मेंघ-माल।
निराला का गीत सुनाया।

आशुतोष- एक और सुना दीजिए त्रिलोचन जी ! चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती...

त्रिलोचन- एक और सुनाएँ... अच्छी बात है।

चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है:
इन काले चिन्हों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं।

चंपा सुन्दर की लड़की है
सुन्दर ग्वाला है: गायें भैसें रखता है
चंपा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है

चंपा अच्छी है, चंचल है
नटखट भी है
कभी कभी ऊधम भी करती है
कभी कभी वह कलम चुरा देती है
जैसे तैसे उसे ढूँढ़ कर जब लाता हूँ
पाता हूँ- कागज गायब
परेशान फिर हो जाता हूँ

चंपा कहती है:
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चंपा चुप हो जाती है

उस दिन चंपा आई मैंने कहा कि
चंपा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा
गांधी बाबा की इच्छा है-
सब जन पढ़ना लिखना सीखें
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
मैंने कहा चंपा पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,
कुछ दिन बालम संग साथ रह चला जाएगा
जब कलका
बड़ी दूर है वह कलका
कैसे उसे संदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी

चंपा पढ़ लेना अच्छा है!
चंपा बोली: तुम कितने झूठे हो, देखा,
मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को संग साथ रखूँगी
कलका में कभी न जाने दूँगी
कलको पर बजर गिरे।

(त्रिलोचन शास्त्री जी के कविता पाठ के बाद कुछ समय तक शांति छाई रही। इसी बीच आशुतोष की माता जी और लघु भ्राता कृष्णानन्द तिवारी भोजन की थालियाँ सजाने में लग गए। आमड़े के अचार को लेकर बातचीत शुरू हुई। त्रिलोचन जी ने कहना आरंभ किया...)

तो मैं आपसे कह रहा था कि तो इसे हमारे यहां आमड़ा बोलते हैं आमड़े का अचार। तो मैंने जब निशपत्र और आमड़ा खड़ा है कहा तो आपको अधिकार है कि आप अगर आमड़ा को आम समझते है। तो कहेंगे त्रिलोचन की ही आंखें देख सकती है निशपत्र और बौर लिए, निशपत्र और बौर एकदम उन्मुख आकाश की ओर लगता था कि जैसे आरती है। तो मैंने एक सानेट ही लिख दी है, तो मेरे आलोचक ने लिखा और पूछा कि आपकी क्या राय है, आलोचना पढ़कर। मेरे जेहन की बात नहीं आई तो मेरा यह कहना है कि अगर मुझे गलत समझा जा रहा है तो मैं क्यों सुधारूँ। मेरा यह काम नहीं है। मैं अगर अपनी कविताओं को खोलकर बताने लगूँ, तो मुझको अहंकारी कहना शुरू कर देंगे। क्योंकि मैं वह सारी बातें कहूँगा जो इशारे में हैं। ....तो लोग कहेंगे बड़ा मनचला है। तो मैं अपनी आलोचना लिखने से बचता हूँ और दूसरों की आलोचना लिखने में अपना कर्तव्य समझता हूँ। लोग मुझे लिखते हैं, उनको बातचीत में और कभी-कभी भेंट में, अनुवाद में। अज्ञेय की पहली आलोचना मेंरी ही है। युगांत जब छपा तो मैंने एक लेख दिया हंस में सन् 1946 में हंस में छपी।

आशुतोष- उस समय आप हंस का संपादन भी करते थे?

त्रिलोचन- संपादन भी कर रहे थे सन् 1946 में। तो मैंने हंस में दिया और कहा कि नाटकीय भंगिता जितनी अज्ञेय की कविताओं में है उतनी दूसरे में नहीं है। इससे ये अनुमान लगाया जा सकता है कि वे शायद नाटक लिखने में अच्छे नहीं थे। मैंने कहा कविता में नाटकीय भंगी आती तो अच्छा नाटककार होने की संभावना

कठिन हो जाती है। तो संभव है कि ये नाटक लिखें और सफल हो जाये तो ये अतिरिक्त उपलब्धि होगी। लेकिन नाटकीय भंगी का प्रयोग कविता में प्राणवा भर देती है। ये उनमें दूसरों की अपेक्षा अधिक है। मने दूसरे कवियों की रचना शैली में है, यानी वर्णनात्मक शैली में, वो भावात्मक नहीं है। इशारे में और बातचीत के लहजे में रचि गई है।

"किसने देखा चांद? -जिसने उसे न चीन्हा
एक अकेली आंख,
बंधी चिरन्तन आयासों से, खुली अजाने,
अनायास.....

तो यह भाषा शैली समझाती है। पढ़कर के कोई कविता आपको अच्छी लग सकती है। जब कोई दूसरा पूछेगा कि क्यों आपको अच्छी लगी ? तो तब आपको आलोचक बनना पड़ेगा। और आप अपनी अच्छी लगने का कारण बताइए। ताकि जिसे अच्छी नहीं लग रही है, जो समझ नहीं पा रहा हैं, उसे समझाएँ। तो दो बातों में खास बात है। अगर बादल घुमड़ते हैं और आप देखकर रह जाते हैं। बादल देखें और देखते रहें। किताब या तो कोई रोचक उपन्यास हो या बन्द करके रख दें। तब आप देखेंगे कि बादल की ये कविताएँ, ...कवि ने केवल काले-काले बादल ही लिख दिया है या कुछ और। तो बादल का रूप बड़ी कविताएँ हैं निराला की। तो निराला बादलों के कवि हैं। और मैदाओं के भी कवि हैं। इशारों की नई बहु की आंखें लिखते हैं। जो हरितिमा में बैठी वृहद बंद कर आंखें..

बहुत से मजदूर किसान ही रहे होगें लेकिन ये बात कहने की ताकत निराला में ही थी। तो यह नहीं कि निराला बड़ा नाम है; हम बड़ी कविता देखते हैं, बड़ा नाम नहीं देखते। और कविता में अगर कुछ नया आ जाये तो उसे कहते हैं। तो लेकिन कविता की ऊँचाई कहाँ आती है। आलोचक का यह काम है। रचनाकार रचना को उभार देता है और वह बर्हिमुख आलोचक हुआ। रचना में तो विफल रचनाकार होता है। अच्छा नहीं है। उसके लिए तो गद्य है सीधे आलोचना के लिए। लेकिन कभी-कभी कविता में भी इस तरह की बातें आती हैं कि कविता में ही कह देने की इच्छा होती है और आलोचना को अन्तर्मुखी बना देना होता है। जैसे "अमोला" नाम का मेरा एक संकलन है और छनद में लिखी गई है, बरवै छन्द में लिखी है। बरवै छन्द सत्ताइश सौ है।

आशुतोष- क्या यह प्रकाशित हो गया है अमोला.....

त्रिलोचन- प्रकाशित हो जाएगा दो-एक महीने में..... (साक्षात्कार लेने के समय तक अमोला संकलन प्रकाशनाधीन था।)

आशुतोष- अवधी में है न ?

त्रिलोचन- हाँ, अवधी में है।

यह तो आलोचना का सूत्र ही है, बरवै छन्द। रचना का इधर ध्यान न जाय, रचना ही उभरे तब रचना तेजस्वी होगी। तो वस्तुतः इतर लोग जो हैं तो वे समझें एक ऐसा वायुमण्डल बने, वातावरण बने। एक ऐसा संघ बन जाए जिसमें कविता को समझने वाले सराहने वाले हों। बिहारी ने कहा है एक दोहे में- "कर लै सूँघि, सराहि कै सबै रहे धरि मौन।" जो नहीं समझा उसका सराहना करना, और समझदार का चुप रहना, ये बेधता है रचनाकार को। समझ की खुराक मिला करे न कवि को तो कवि कविता में बहुत आगे बढ़ जाता है, और यह खुराक न आलोचक दे पाते हैं और न समवर्ती, उसके साथी। तो किसी कवि के न होने के उनके बहुत से संस्मरण आदि लिखे जाते हैं। तो बहुधा मैं ऐसे देखता हूँ, जैसे कमल के नीचे मेंढक वह कमल की सुगंध को क्या जानेगा। यद्यपि वह रहता है जल में और बिल्कुल साथ रहता है। तो भाई मेंढक कृत से निर्लिप्त भाव से कोई संस्मरण लिखा जा रहा है - कि भाई वो ये खाता है, ये खाता था, ये पहनता था, ऐसे रहता था, या वह शराब पीता था और किस तरह का यह सब भी है, तो लेकिन खास बात यह नहीं है। कोई आदमी मटर की रोटियाँ खा कर अगर अच्छी कविता लिख रहा है, तो यह जरूरी नहीं कि हर मटर की रोटियाँ खाने वाला अच्छा कवि होगा।

आशुतोष- इसका मूल्यांकन तो उसकी कविता पर होगा।

त्रिलोचन- हाँ, कविता पर होना चाहिए।

कविता का सारा वैभव जो भाषा पर है, और भाषा कवि अपनी ओर से अगर नया कहे, तो दो प्रतिशत से अधिक नया करने की इजाजत नहीं है। अगर वह पांच प्रतिशत कर देता है तो उसे विक्षुब्ध कहने लगेंगे। समझने में बाधा पड़ेगी। यह काम निराला ने किया है। निराला को पागल का नाम दिया गया। तो मेरा यह कहना है कि लोग अपने को समझदार मानकर कवि को पागल घोषित करते हैं। तो आज का जमाना इतना बदल गया है कि कवि को खुद पढ़ना पड़ता है। पढ़कर के आप दूसरे कवियों को प्रभाव में लेकर लिखे, तो आप कमजोर पड़ेंगे। आप अपनी आंखों का उपयोग करें, और चीजों को ऐसा देखें कि जान पड़े कि कोई नई बात है। मेरी एक छोटी सी कविता है "गर्मियों में" तो सुनकर लगेगा कि भौंहो को इन्द्रधनुष बना दिया कवि ने और मतलब भी यह है कि जो तेज है आजकल गर्मी है। धूप हो तो बना दिया कवि ने और मतलब भी यह है कि जो तेज है आजकल गर्मी है। धूप हो तो अगल-बगल देखने में असमर्थ होगें तो आप रास्ता में सर जरा झुकाकर चलते हैं। और मान लीजिए सुबह जाएँ

धूप में तो भौहों पर इन्द्रधनुष दिखेगा। इन बादलों में क्योंकि आंखें सजल रहती हैं, सूजी हैं, आर्द्र हैं, इसके कारण ये इन्द्रधनुष दिखता है। इन्द्रधनुष दिखना यानी सीधी राह अनुमान करके आगे बढ़ना। उल्लास बगल में न देखना। चिलग होने से तो गर्मियों में इन्द्रधनुष आकर भौहों पर टिका था, उसे मैंने बादलों को दे दिया। इन्द्रधनुष आकाश में ही भला लगता है। मने गर्मियों की तीव्रता में भला नहीं लगता। और जो भौहों में इन्द्रधनुष दिखता है वह इन्द्रधनुष आपको सताता है। आपकी दृष्टि शक्ति को भी बाधित करता है और गर्मी का वर्णन जब निराला करते हैं, तो स्वयं घूमें हैं गर्मी में। आप उस पर नेक सुरूचि दे उन्होंने लिखा है

"यह सान्ध्य समय है
प्रलय का दृश्य भरता"

तो भाषा के द्वारा इशारा में कवि क्या कह रहा है। इशारा जब समझ में आय तब कविता समझ में आती है। माने बता देने से। माने सुन के कविता की सुन्दरता तक आ पहुंचा यह नहीं हो सकता। कविता जब आपका प्राण मित्र बन जाय तब कविता आपकी अपनी हो गई। लिखा किसी ने हो। तब आप उस कविता में जीवन देने की शक्ति पायेंगे। और यदि कविता लिखने भी नया विचार आ रहा हो तो बहरहाल आपने आज का कवि जो आलोचक है। जब कवि देखा है कि उसकी कविता को जितना समझना चाहिए लोग उतना नहीं समझ पाये। वह नीरज जैसा भी कवि हो सकता है। कवियों की इतनी ही कोटियां होती हैं कि जितना कि आदमियों की अगर सभी आदमी कवि हो जाएँ तो जितनी आदमियों की कोटियाँ है, उतने स्तर के कवि होंगे। जैसे सड़कों पर लोग साहित्य बेचने वाले व्यक्तियों द्वारा रचे गये हैं।

> हम कहें कि तुलसीदास को कहें कि राम भक्ति को छानकर हम अलग कर देंगे, बाकी जो तुलसीदास में है उसे हम रखेंगे तो भईया तुलसीदास ही गायब हो जाएंगे। इसी तरह से आग्रह है जो हमारे यहां है, वह निज का है आप हमारी कविता पढ़कर हमें गालियां दीजिए लेकिन हम अपनी प्रतिबद्धता नहीं छोड़ेंगे। ये है कि प्रतिबद्धता समाज के लिए अनिवार्य है।

उनमें कविता नहीं है, मैं नहीं कह रहा हूँ। लेकिन वह कविता सबके लिए कविता हो यह नहीं है। भिखारी के नाटक हैं उसमें नई सूझ-बूझ है। भिखारी ठाकुर का नाम सुना है न।

आशुतोष- जी, हाँ।

त्रिलोचन- तो भिखारी में अश्लील व्यंजना भी है। अश्लील व्यंजना वह गांव का रहने वाला था। गांव में अश्लीलता की धारणा अलग है। वह वहां व्यंजना अश्लील नहीं है। नर के नारी के प्रति प्यार, तो नारी के नर के प्रति प्यार यह उसने लिखा है। लेकिन यह प्यार तो अश्लील नहीं है। इसी से मनुष्य जाति आगे बढ़ती है। इसी प्यार के अनन्त ... में... और पति पत्नी दोनों का प्यार केन्द्रित हो जाता है। शिशु पर और यह शिशु समाज का एक सदस्य होता है तो एक व्यक्ति समाज का पर्याय बनता है। देखा न आपने, तो कविता में खास बात यह है कि भाषा द्वारा क्या नया संस्कार दे रहा है या भाषा में अपनी ओर से क्या नयापन भर रहा है। वह भाषा के स्वरूप का रक्षक है। उसको बढ़ाने वाला है या और घसीटने वाला है। या पहेलीनुमा बना देने वाला है। कविता पहेली से ऊपर की चीज है। यद्यपि पहेलियां भी कविता में लिखी जाती हैं। है न - "एक थाल मोती भरा सबके सिर पर औंधा धरा। चारो ओर यह थाली हिले मगर उसमें से मोती एक न गिरे।" तो ये पहेली है।

आशुतोष- कविता पर जो आलोचना होती है वह है रचनात्मक क्षमता.....

त्रिलोचन- हाँ, तो मैंने आपको कहा कि कवि अन्तर्मुख आलोचक होता है, और आलोचक जो है, वह अन्तर्मुख कवि होता है। वही आलोचक है। काव्य की अनुभूति की प्रेरणा उसमें भी हो। तभी उसकी आलोचना काम की होगी। नहीं तो अध्यापक लोग अपने बच्चे को समझाते है। वही समझा कर आगे बढ़ जाते हैं या कहेंगे कि कितने सफल व्यक्ति हैं अमूक विषय में। और कैसे सफल हैं यह नहीं पता। तो एक आलोचना वह होती है जो आसान होती है और इस आलोचना का कभी-कभी संक्षिप्तता के ख्याल से डॉ. रामविलास शर्मा को भी करना पड़ता है। लेकिन असल में अच्छे आलोचक का काम यह नहीं है कि 'राष्ट्र भक्ति इतने ऊँचे भाव से व्यक्त की गई है'- यह आलोचक का काम नहीं है। वो पहले तो समझाए कि राष्ट्र क्या है, फिर राष्ट्र भक्ति क्या है, फिर उसकी व्यंजना क्या है। इतना कहे फिर इसके बाद बताये कि इस पंक्ति में यह बात क्या आती है।

आशुतोष- रचना की तुलना में समीक्षा का कार्य लोग द्वितीयक मान कर चलते हैं। और यह मानते हैं कि रचना हमेंशा आगे चलती है। आपके विचार से रचना के विकास में आलोचना की क्या भूमिका है?

त्रिलोचन- रचनाकार जो है, आलोचनाकार का वह मित्र है, जो पीठ ठोकता, प्यार से और कभी घूंसा मारता, दोनो करता है। आलोचक जो है वह कवि का जागरण नहीं है। वह भाषा और शेष पाठकों का प्रतिनिधि है। अगर यह नये पाठकों को नया संस्कार दे रहा है तो उस नये संस्कार को समझाना आलोचक का काम है। हो सके वह एक ही कवि की तारीफ भी करे और निंदा भी करे।

आशुतोष- जी !

त्रिलोचन- तो जहो निंदा करना है, तो वहां उसे चुकना नहीं है। जहां कवि घटिया स्तर पर जा रहा है, तो वहां उसे बताना होगा कि वह ऊँचाई छोड़ चुका है। और जहां ऊँचाई पकड़ता है तो कहना चाहिए कि यहां ऊँचाई है।

आशुतोष- अगर आप देखें तो कवि आलोचक से और आलोचक कवि से शिकायत करता है। क्या कारण है कि केदारनाथ अग्रवाल ने डॉ. कमला प्रसार को दिए एक इंटरव्यू में नामवर सिंह से शिकायत की है कि उन्होंने श्रीकांत वर्मा जैसे कवियों का मूल्यांकन तो किया है लेकिन उनके कविता पक्ष का मूल्यांकन नहीं किया है।

त्रिलोचन- केदार जी ने बहुत लिखा था और आलोचक को तो पहले पाठक होना पड़ेगा। और सारी किताबें इकट्ठा हो जाए और समय भी रहे। तो सीधी बात यह है कि किसी कवि को किसी आलोचक से यह शिकायत नहीं करनी चाहिए कि उसने उस पर नहीं लिखा। कम से कम मैं अपनी आदत बता रहा हूँ। अगर मेरा नाम बरसों लोगों ने नहीं लिया तो मैंने तो यह कविता तो लिखी है। "प्रगतिशील कवियों की नई लिस्ट निकली है। उसमें कहीं तो त्रिलोचन का तो नाम नहीं था, आंखें फाड़-फाड़ कर तो देखा।" तो प्रगतिशील आन्दोलन के आरम्भ करने वालों में मैं था। शरीक था। किन्तु नाम नहीं था। तो मैंने अपने ऊपर व्यंग्य करते हुए लिखा। लेकिन मैंने यह नहीं लिखा कि आशुतोष ने मुझ पर आलोचना नहीं लिखी। अरे ! आशुतोष को मेंरी कोई कविता न मिली होगी। या मान लीजिए दो-तीन कविताएं मिली होगी। और उन्होंने आलोचना के योग्य दो-तीन को पढ़ के भी नहीं आंका। तो, आशुतोष को इतना तो हमें आजादी देना होगा। अगर आशुतोष मुक्त प्रेम के समर्थक हैं और मैं उसका विरोधी तो मैं आशुतोष को आदमी मानने से इन्कार कर दूँ, यह कहां तक ठीक होगा। स्वतंत्रता का आदर करना ही मेरा मनुष्य होना है। और मनुष्य होने से और ऊँचा होना है, कवि को क्षमाशील भी होना चाहिए, क्योंकि कविता का फैसला आज के लोग जो दे रहे हैं तो यह तो देखा जाएगा। निराला की कविताओं पे कठोरतम प्रहार किया गया। और जिन कविताओं पर प्रहार हुआ वही कविताएं सराही गई बाद में, जुही की कली और तमाम कविताएं जो रूढ़िवादी आलोचकों द्वारा बहुत तिरस्कृत हुई हैं। उन कविताओं पे जो नये सिरे लिखे। कविताएं ज्यों की त्यों रही; यह क्या बात है। पीढ़ी बदलने के साथ-साथ निराला को नई पीढ़ी समझने में समर्थ हुई और होंगी भी। और पुरानी पीढ़ी जो पण्डितों की थी। दोनों को वह नहीं समझतें हैं, तो क्या विद्वता से कविता समझ में आती है ? .. ना। अगर जो भाव-धारा उनमें व्यक्त है, वो भावधारा भी यदि पाठक के अन्दर है तभी कविता समझ में आएगी। नहीं तो नहीं आएगी।

आशुतोष- जी ।

त्रिलोचन- तो सीधी बात यह है कि केदार ने भी बहुत लिखा है और वे कहते हैं श्रीकांत पर नामवर ने लिखा और मुझ पर नहीं लिखा तो क्या वे श्रीकांत वर्मा से पर पर सोचते हैं अथवा ऊँचाई पर। सवाल यह है कि कविता देखने के लिए फुरसत चाहिए। अगर आप बहुत व्यस्त हैं अध्ययन का कोई क्रम बना लिया है तो समय किसी अच्छे कवि को भी नहीं पा सकते। तो मेंरे अत्यंत परिचित लोग जो मुझसे बात करते थे और कहते थे कि मैं आप पर काम करने जा रहा हूँ, तो मैं कहता था कि मत जाइए। लोग कहेंगे कि कवि ने ही लिखाया है। क्योंकि आप मेंरे परिचित मण्डल में हैं। यह मेंरे लिए बहुत ही लज्जाजनक बात होगी। मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा। इसलिए आप को तो नहीं। एकाध जो मेंरी बात नहीं मान सके उन्होंने लिखा है, तो लिखने पर लोगों ने कहा कि त्रिलोचन को देखा-देखी खड़ा, लोग कर दिए। देखा-देखी खड़ा करते हैं- छानी को ऊँचा करना है। तो छानी को जैसे बहुत ऊँचा करना है तो टेका लगाकर उठाएंगे हाथ नहीं पहुंच रहा है। तो अगर त्रिलोचन को खड़ा कर दिया गया.... तो भई इससे त्रिलोचन को ऊँचाई नहीं मिलेगी। किसी कवि को भी नहीं मिलेगी। अगर आप अपने संसार में किसी कवि को ऊँचा उठा रहे हैं तो संसार में नई पीढ़ी जन्म ले रही है। उससे आपका परिचय जरूरी है। और यह जो नया आस्वाद है, इस नए आस्वाद को पहले आपको व्याख्यापूर्वक समझाना पड़ेगा। और बताना पड़ेगा कि पुरानी पीढ़ी से भिन्नता यहाँ है। यह जब आप सोचेंगे, तब आप आलोचक होंगे; तो आलोचकों से मेंरी कोई शिकायत नहीं है। कोई आलोचक मान लीजिए विजय गुप्त पर लिखता है तो मुझे भई क्यों आपत्ति है। किसी भी कवि की रचना होती है, तो मैं समझता हूँ कि कविता का सम्मान करने के लिए आलोचक लिख रहा है। तो कविता का सम्मान हो रहा है, तो मैं कहाँ असम्मानित

हो रहा हूँ। मैं भी सम्मानित हूँ, भले ही कहीं पर तो उसी से मेरा नाता है।

आशुतोष- समकालीन कविता और समकालीन आलोचना की अभी क्या स्थिति है ?

त्रिलोचन- समकालीन कविता में दो बातें आती है- मान लीजिए कोई कम उम्र का है, थोड़ी ऊँचाई, लेकिन नई उम्र के कवियों में एक बात हो सकती है। थोड़ी ताजगी है, अगर किसी अपने से बड़ी पीढ़ी वाले कवि की कविता नकल नहीं कर रहा है। तो मैं इस ताजगी का प्रशंसक हूँ। याद रखिए मैं जमकर इसकी प्रशंसा करता हूँ। तो ताजगी मेंरी जीवन शक्ति जो है, उस जीवन शक्ति को देखता हूँ, जो भाषा के द्वारा आई है। मेंरी जीवन शक्ति तूलिका और रेखाओं के सहारे चित्रकार देता है, तो चित्रकार के चित्र को समझने के लिए देशकाल का अवरोध नहीं है। भाषा अवरोध बनाती है। भाषा सीमित क्षेत्र में रहती है। अब जो आधुनिक हिन्दी में कविता लिखते हैं, उनको ये जानना होगा कि ये आधुनिक हिन्दी चौबीस घंटे की बोलचाल की भाषा कम लोगों में है, या नहीं है। तो इसमें कविता करना कठिन इस कारण है।

आशुतोष- समकालीन कविता की मुख्य चुनौती क्या है?

त्रिलोचन- सवाल यह है कि कविता का क्या जीवन से ताल्लुक है ? तो, मैं समझता हूँ कि है। तो जीवन के सामने चुनौतियां हैं, वही समकालीन बोधवाला जो कवि होगा, उसकी कविता में भी होगी और याद रखिए कि समकालीन चुनौतियों को सभी अच्छी तरह समझ जाएं कोई आवश्यक नहीं। तो समकालीन समस्याओं को और प्रश्नों को लेकर लिखी कविताएं, यदि विलंब से लोगों की समझ आती हैं और कम लोगों की समझ में आती हैं। तो भी कवि को अन्य कवि पर ध्यान दिया जाना चाहिए। और बहुत संभव हो कि तात्कालिक प्रश्नों की समझ ही न हो लोगों में। तो, वे कवि की लिखी चीज को भी असामयिक और अप्रासंगिक कह सकते है। यहां पर कवि को अपनी दृढ़ प्रकृति से, ऐसे ध्यान न देने वालों का सामना करना होगा।

आशुतोष- आपको लोग बड़ा कवि कहते हैं, आपकी क्या राय है ?

त्रिलोचन- अपने को बड़ा कहने की सोच तो कहते हैं- कि आप बड़े कवि हैं, लेकिन यदि कह देंगे तो अपने भीतर का जो सच है, वह आपका निजी है, वह सार्वजनिक सत्य न बनेगा। तब तक आपका मजाक बनाया जाएगा। है न ? इसलिए देखना यह है कि आप जो कह रहे हैं, उसे लोग मानते हैं कि नहीं। तो पहले आपकी कविता ही लोगों का सामना करे। आप उसमें वह अर्थ बनाने लगें जो आपने लिखा ही नहीं है, तो यह गलत है। आपने जो लिखा है, वह होना चाहिए। मेरा यह कहना है कि हमारे अन्दर जो संस्कार है, छंदों का न और जो भाषा की पहचान है। भाषा की सुन्दरता पहचानने की ताकत कम लोगों में होती है। हाँ, जैसे आप जब छोटे रहे होंगे तो कहानियाँ सुनने का शौक था न और कहानियाँ सुनाने वाले में आप ध्यान दीजिए तो जिसकी कहानियों से आप मुग्ध होते चलते थे। उसके कहानी कहने के ढंग की वजह से। वही कहानी चार मुखों से सुनते थे, तो वह प्रभाव नहीं पड़ता होगा, जितना एक विशेष से। और वह जब भी मिल जाता होगा तो आप उसके पीछे पड़ जाते होंगे कहानी सुनाओ-कहानी सुनाओ। चाहे उसकी मनःस्थिति जैसी हो। और फिर उससे कहानी सुनकर ही छोड़ते हैं। वहाँ भाषा सीखने की भी ललक है और कहानी भी सीखने की। जो है, कहानी के साथ चरित्र सीखने की। तो ऐसे ही कविता एकहरी नहीं है। ये कई परतें चलती रहती हैं। आज यह है कि लोग गद्य में कविता लिखेंगे और वह कविता जान पड़े इसलिए वे अनुप्रास दे देंगे। लय-वय नहीं है। ऐसी कविताएँ श्रीकांत वर्मा ने भी लिखी है और कई लोगों ने लिखी है। इन्होंने तो फ्री छन्दों का प्रयोग किया है, फ्रीव्हर्स कहिए। मुक्तिबोध में अनेक जगह वह छंद पूरी तरह मिलता है, तो पूरी मात्रा में देकर यह जरूरी नहीं है। लेकिन यह कि इन कविताओं में लयदारी है।